''पुरस्कृत शिक्षक–शिक्षिकाओं में व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण का एक विश्लेष्णात्मक अध्ययन''

पूजा गुप्ता
शोधकर्त्री (शिक्षा शास्त्र)
हिमगिरी जी युनिवर्सिटी
देहरादून ,उत्तराखंड

सारांश

ईश्वरीय सृष्टि की सर्वोत्तम कृति मानव शिशु है। उस शिशु को विकसित और परिष्कृत कर मानव बनाने का गुरूवर कार्य शिक्षक को सौंपा गया है। सच्चा शिक्षक समाज की आधारशिला होती है। कलाकार की तुलना में शिक्षक को श्रेष्ठतर माना जाता है। शिक्षा से अन्य दो शब्दों का प्रादुभाव हुआ है– शिक्षक और शिक्षार्थी। शिक्षा देने वाला शिक्षक और शिक्षा ग्रहण करने वाला शिक्षार्थी। शिक्षा के मानव जीवन में महत्व के कारण ही शिक्षक का स्थान भी अत्यधिक महत्तवपूर्ण बन गया।शिक्षक के पास मनुष्य के निर्माण की कला होती है। एक आदर्श शिक्षक इससे भी कई अधिक अपनी पहचान बनाता है। वह अपने व्यक्तित्व के द्वारा छात्रों और अन्य शिक्षकों के लिए एक प्रेरणा स्रोत का कार्य करता है, जिससे प्रेरित होकर शिक्षक अपने शिक्षण में सुधार लाने का प्रयास करते हैं। शिक्षक का दायित्व केवल विद्यालय के प्रति ही नहीं होता वरन् वह समाज के प्रति भी दायित्वाधीन होता है। अतः एक पुरस्कार प्राप्त आदर्श शिक्षक की शैक्षणिक प्रभावशीलता ज्ञात करना आवश्यक है ताकि सामान्य शिक्षक भी अपनी योग्यता, क्षमता, दूरदृष्टिता से अवगत हो सके व वे अपनी क्षमता का विकास करने के लिए एक दृष्टिकोण प्राप्त कर सकेंगे।

शब्द कुंजी :– शिक्षक, शिक्षार्थी, दृष्टिकोण, पुरस्कार ।

प्रस्तावनाः– शिक्षा से अन्य दो शब्दों का प्रादुभाव हुआ है– शिक्षक और शिक्षार्थी। शिक्षा देने वाला शिक्षक और शिक्षा ग्रहण करने वाला शिक्षार्थी। शिक्षा के मानव जीवन में महत्व के कारण ही शिक्षक का स्थान भी अत्यधिक महत्तवपूर्ण बन गया। जिस प्रकार मानव सभ्यता का प्रारम्भ भारत से ही हुआ उसी प्रकार शिक्षा पर चिंतन भी भारत में ही शुरू हुआ। गुरूकुल की अवधारणा इसका पहला चरण था। आदिकाल में शिक्षा का क्षेत्र व्यापक था पर उसका अधिकार सीमित था। यह अपने विकसित रूप में सबको उपलब्ध नहीं थी। चुनिन्दा जातियों और कुल के पास ही इसके अधिकार थे। लेकिन शिक्षा का क्षेत्र व्यापक होने के कारण शिष्य को पाकशास्त्र, गायन, नृत्य, शास्त्र, वेद, नीति, अस्त्र–शस्त्र के अलावा लकड़ी काटना तक सीखाया जाता था, भले ही वह राजकुमार ही क्यों न हो। माता–पिता अपनी संतानों को गुरू के सुपुर्द कर देते थे और शिक्षा समाप्त होने के बाद ही वे अपने घर को प्रस्थान करते थे। गुरूकुल में निवास के दौरान ही छात्रों का किसी भी सूरत में परिवार से कोई सम्पर्क नहीं रहता था और वे पूर्णतया गुरू के संरक्षण में रहते थे। इसी कारण वे पूरी तरह गुरू निष्ठ होते थे और उस समय गुरू का आदर ईश्वर के समान ही था।

गुरू भी अपने आचरण में इस सम्मान का पात्र बनने का पूरा प्रयास करते थे। उनके लिए शिष्य का हित ही सर्वोपरि था।

आज गुरू का स्थान शिक्षक ने लिया है यह कहना पूरी तरह सही तो नहीं होगा, पर और कोई विकल्प भी नहीं है। आज शिक्षा की अवधारणा ही बदल गई है और इसी कारण शिक्षक का स्थान और महत्व भी घटता जा रहा है। आज शिक्षा जीवन नहीं जीवन का एक अंग मात्र है। वह अंग जो जीविकोपार्जन का प्रबन्ध करता है। शिक्षा का अर्थ बदलने के साथ ही सब कुछ बदल गया। अब वह शिक्षा उपयोगी है जो आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करें। शिष्य अर्थ से संचालित है। तो शिक्षक कैसे इससे वंचित रह सकते हैं। सबके लिए शिक्षा का अर्थ केवल अर्थ ही रह गया है। शिक्षा का मूल अर्थ कहीं खो सा गया है। लेकिन बदलाव केवल प्रयोग में था, इसलिए शिक्षा की बेहतरी के लिए निरन्तर प्रयास चलता रहा। इसी क्रम में सी0बी0एस0ई0 ने सी0सी0ई0 (Continious and Comprehensive Evaluation) पैटर्न लागू किया, जिसमें बालक के सम्पूर्ण विकास को ध्यान में रखकर पूरा पाठ्यक्रम बनाया गया है। इसमें शिक्षक की भूमिका फिर महत्वपूर्ण हो गई। अब वह केवल कॉपी जांचकर पास–फेल करने वाला कर्मचारी नहीं रह गया। एक बार फिर उसे बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को समझने और उसे निखारने की जिम्मेदारी दी गई है। सभी शिक्षक अपने को इस भूमिका में अनुकूलित नहीं कर पाते। कारणवश् कार्यभार बढ़ने से परेशान रहते हैं। लेकिन अपनी सामाजिक स्थिति सुधारने के लिए उन्हें अपने को इस भूमिका के लिए तैयार करना होगा। उन्हें कबीर का वह कुम्हार बनना होगा जो शिष्य रूपी कुम्भ को आकार देता है।

इस जिम्मेदारी से भागने वाला व्यक्ति शिक्षक नहीं केवल एक वेतन भोगी कर्मचारी है, जिसके लिए शिक्षक दिवस एवं शिक्षक पुरस्कार के लिए कोई औचित्य नहीं। अंग्रेजी की कहावत है–"if you want to be treated like an emperor, behave like one".

यदि आप राजा का सम्मान पाना चाहते हैं तो राजा की तरह व्यवहार कीजिए। इस संदर्भ में यह कह सकते हैं कि यदि आप गुरू का या शिक्षक का सम्मान पाना चाहते हैं तो अच्छे आदर्श शिक्षक की तरह व्यवहार करना होगा। आदर्श शिक्षक बनने हेतु किसी शिक्षक को नित्य कक्षा में प्रवेश करने से पूर्व कक्षा में पढ़ाये जाने वाले पाठ की योजना बनाकर उस पाठ–योजना पर स्वामित्व रखना आवश्यक होता है। इसके अतिरिक्त समय के बदलते परिवेश में प्रति क्षण ज्ञान का क्षेत्र व्यापक होता जा रहा है जिस हेतु शिक्षा प्रदान करने वाले व्यक्ति को वर्तमान समसामयिक घटनाओं को पढ़ाये जाने वाले विषय–वस्तु से सहसम्बन्धित करना चाहिए ताकि विद्यार्थियों को अद्यतन ज्ञान प्राप्त हो सकेगा। ऐसा करने से शिक्षा प्रदान करने वाले तथा शिक्षा ग्रहण करने वालों में नवीनता एवं मौलिकता के गुण विकसित होते जाते है जिनका उपयोग वे कुछ ऐसा विशिष्ट कार्य शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के क्षेत्र में करते हैं जिस वजह से वे राज्य

सरकार, केन्द्र सरकार एवं अन्य संस्थाओं से सम्मानित किये जाते हैं। यह सम्मान उन्हें पुरस्कार, प्रशस्ती–पत्र, आर्थिक सहायता अथवा उनकी सराहना करके प्रदान किया जाता है।

उत्तराखण्ड राज्य में माध्यमिक एवं प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं को शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य करने पर शैलेश मटियानी राज्य शैक्षिक पुरूस्कार प्रदान किया जाता है। इसके अतिरिक्त राज्य पुरस्कार व राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किये जाने का प्रावधान भी है। शिक्षकों को उत्कृष्ट कार्य करने पर दिया जाने वाला राष्ट्रीय पुरस्कार 1958 ई0 में आरम्भ किया गया जो कि राष्ट्रपति द्वारा प्रति वर्ष 05 सितम्बर को सार्वजनिक रूप में प्रदान किया जाता है। पुरस्कार प्राप्ति हेतु शिक्षको से आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं तत्पश्चात् एक कमेटी बनाई जाती है जो कि उत्कृष्ट कार्य की सत्यता का धरातलीय निरीक्षण और परीक्षण भी करती है। इस चयन प्रकिया में शिक्षक के पुराने रिकार्ड को भी सम्मिलित किया जाता है।

''जन्म देने वालों से अधिक सम्मान अच्छी शिक्षा देने वालों को दिया जाना चाहिए क्योंकि उन्होंने तो बस जन्म दिया है। लेकिन शिक्षा देने वालों ने तो जीना सीखाया है''।

नेल्सन मंडेला

''एक औसत दर्जे का शिक्षक सिर्फ बताता है। एक अच्छा शिक्षक समझाता है। एक बेहतर शिक्षक करके दिखाता है। परतु एक महान शिक्षक प्रेरित करता है''।

अरस्तु

अध्ययन की आवश्यकताः–

ईश्वरीय सृष्टि की सर्वोत्तम कृति मानव शिशु है। उस शिशु को विकसित और परिष्कृत कर मानव बनाने का गुरूवर कार्य शिक्षक को सौंपा गया है। सच्चा शिक्षक समाज की आधारशिला होती है। कलाकार की तुलना में शिक्षक को श्रेष्ठतर माना जाता है। कलाकार के द्वारा किया गया कार्य यदि बिगड़ जाता है तो उससे समाज को बहुत कम हानि होती है किन्तु यदि शिक्षक की कृति, विकृत हो जाए तो दुष्परिणाम सारे समाज और राष्ट्र को बिगाड़ सकता है। शिक्षक के पास मनुष्य के निर्माण की कला होती है। एक आदर्श शिक्षक इससे भी कई अधिक अपनी पहचान बनाता है। वह अपने व्यक्तित्व के द्वारा छात्रों और अन्य शिक्षकों के लिए एक प्रेरणा स्रोत का कार्य करता है, जिससे प्रेरित होकर शिक्षक अपने शिक्षण में सुधार लाने का प्रयास करते हैं। शिक्षक का दायित्व केवल विद्यालय के प्रति ही नहीं होता वरन् वह समाज के प्रति भी दायित्वाधीन होता है। अतः एक पुरस्कार प्राप्त आदर्श शिक्षक की शैक्षणिक प्रभावशीलता ज्ञात

करना आवश्यक है ताकि सामान्य शिक्षक भी अपनी योग्यता, क्षमता, दूरदृष्टिता से अवगत हो सके व वे अपनी क्षमता का विकास करने के लिए एक दृष्टिकोण प्राप्त कर सकेंगे।

कठिन शब्दों का परिभाषिकरणः–

दृष्टिकोणः–इस शोध अध्ययन में शोधार्थिनी का दृष्टिकोण से तात्पर्य यह है कि पुरस्कृत शिक्षक के प्रति विद्यार्थियों, अपुरस्कृत शिक्षक–शिक्षिकाओं, अभिभावकों एवं समाज की सोच किस प्रकार की है।

विशिष्ट गुणः– विशिष्ट गुण से तात्पर्य पुरस्कृत शिक्षक–शिक्षिकाओं में ऐसी क्या अलग से विशेषता होती है, जिसके कारण वे प्रसिद्ध, प्रख्यात व मशहूर हो जाते हैं।

पुरस्कारः–जब कोई भी व्यक्ति अपने व्यवसाय से सम्बन्धित अन्य की अपेक्षा विशिष्ट कार्य करते हैं तब उसे दिया जाने वाला आदर सत्कार, प्रोत्साहन, प्रशस्ति पत्र, धन या अन्य पदार्थ को पुरस्कार कहते हैं। पुरस्कार व्यक्ति, स्वयं अपने आपको भी आन्तरिक रूप से दे सकता है जो कि उसे आगे भी कार्य करने के लिए प्रेरित करती है।

अभिभावकः– विद्यालयों में अध्ययनरत् (शिक्षा गृहण करने वाले) बालक एवं बालिकाओं के माता–पिता, भाई–बहिन जो विद्यार्थियों को शिक्षा ग्रहण करने की व्यवस्था करते हैं और उन्हें निर्देशन एवं परामर्श प्रदान करते हैं, को अभिभावक की श्रेणी में रखा जाता है।

गुणः– व्यक्ति को महान बनाने वाले लक्षण को गुण कहा जाता है।

अध्यापक :– विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने वाले व्यक्तियों को अध्यापक कहा जाता है।

विद्यार्थी :– वह व्यक्ति जो सदा कुछ न कुछ और किसी न किसी विषय में जानने व सीखने को लालायित तथा प्रयत्नशील रहता है।

उद्देश्य :–

⇒ पुरस्कार प्राप्त शिक्षक/शिक्षिकाओं में शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण को जानना।

⇒ पुरस्कार प्राप्त शिक्षक/शिक्षिकाओं में प्रशासनिक कुशलता का अध्ययन करना।

अवधारणाएं

⇒ पुरस्कार प्राप्त शिक्षक/शिक्षिकाओं में शिक्षण व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक रहता है।

⇒ पुरस्कार प्राप्त शिक्षक/शिक्षिकाओं में प्रशासनिक कुशलता पर्याप्त रहती है।

सीमांकनः–

ष्षोधार्थिनी ने अपनी श्रम, शक्ति एवं समय को ध्यान में रखते हुए इस अध्ययन को केवल गढ़वाल मण्डल में स्थित जनपद देहरादून में स्थित प्राथमिक विद्यालयों तथा राजकीय माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित किया है।

न्यायदर्शः–

शोधार्थिनी द्वारा यादृच्छिकी निम्नवत् न्यादर्श का चयन किया जायेगा।

1. पुरस्कृत शिक्षक–शिक्षिकाओं की संख्या कम होने के कारण प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के 15 पुरस्कृत शिक्षक–शिक्षिकाऐं।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

1. Dr. (Mrs.) Umme Kulsum :- शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति मापनी (ASTP-KU)

अवघारणा संख्या–1

पुरस्कार प्राप्त शिक्षक/शिक्षिकाओं में शिक्षण व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक रहता है।

तालिका संख्या 1.1

कथन	पूर्णतः सहमत	स्हमत	असहमत	पूर्णतः असहमत
सकारात्मक	70.37	27.78	1.85	0.00

नकारात्मक	0.47	1.88	28.17	69.48

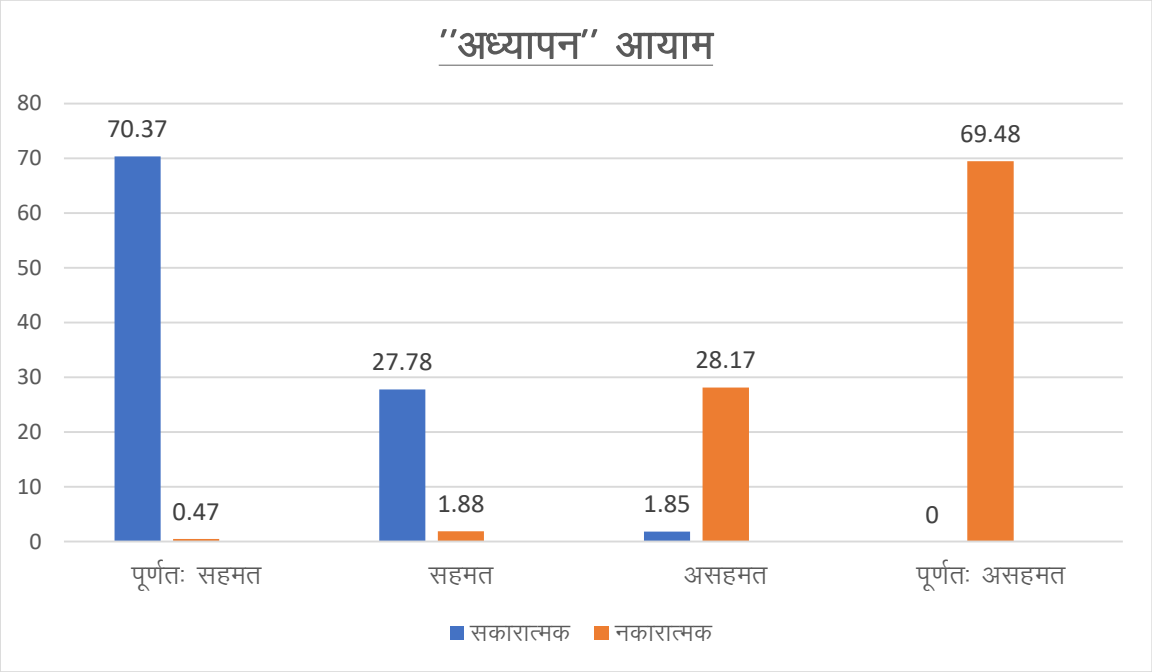

विश्लेषण :– उपयुक्त तालिका संख्या 1.1 एवं अनुलग्नक में अंकित सकारात्मक कथन संख्या 1,26,31,40,45 और 52 के अनुसार द्वितीय आयाम ''अध्यापन'' से प्राप्त आंकडों का प्रतिशत देखते हुए यह कहा जा सकता है कि 70.37 प्रतिशत पुरस्कार प्राप्त शिक्षक/शिक्षिकाए शिक्षण व्यवसाय (अध्यापन) से पूर्णतः संतुष्ट है, 27.78 प्रतिशत पुरस्कार प्राप्त शिक्षक/शिक्षिकाए शिक्षण व्यवसाय (अध्यापन) से संतुष्ट है, 1.85 प्रतिशत पुरस्कार प्राप्त शिक्षक/शिक्षिकाए शिक्षण व्यवसाय (अध्यापन) से असंतुष्ट है तथा कोई भी (शून्य प्रतिशत) शिक्षक/शिक्षिकाए शिक्षण व्यवसाय (अध्यापन) से पूर्णतः असंतुष्ट नही है ।

उपयुक्त तालिका संख्या 1.1 एवं अनुलग्नक में अंकित नकारात्मक कथन संख्या 11,18,25 और 32 के अनुसार द्वितीय आयाम ''अध्यापन'' से प्राप्त आंकडों का प्रतिशत देखते हुए यह कहा जा सकता है कि 0.47 प्रतिशत पुरस्कार प्राप्त शिक्षक/शिक्षिकाए शिक्षण व्यवसाय (अध्यापन) में उक्त नकारात्मक कथनों से पूर्णतः सहमत है, 1.88 प्रतिशत पुरस्कार प्राप्त शिक्षक/शिक्षिकाए शिक्षण व्यवसाय (अध्यापन) से सहमत है, 28.17 प्रतिशत पुरस्कार प्राप्त शिक्षक/शिक्षिकाए शिक्षण व्यवसाय (अध्यापन) से असहमत है, 69.48 प्रतिशत पुरस्कार प्राप्त शिक्षक/शिक्षिकाए शिक्षण व्यवसाय (अध्यापन) में उक्त नकारात्मक कथनों से पूर्णतः असहमत है ।

अवधारणा संख्या–2

पुरस्कार प्राप्त शिक्षक/शिक्षिकाओं में प्रशासनिक कुशलता पर्याप्त रहती है।

तालिका संख्या 2.1

कथन	पूर्णतः सहमत	स्हमत	असहमत	पूर्णतः असहमत
सकारात्मक	73.24	23.54	1.88	0.94
नकारात्मक	0.00	11.88	20.79	67.33

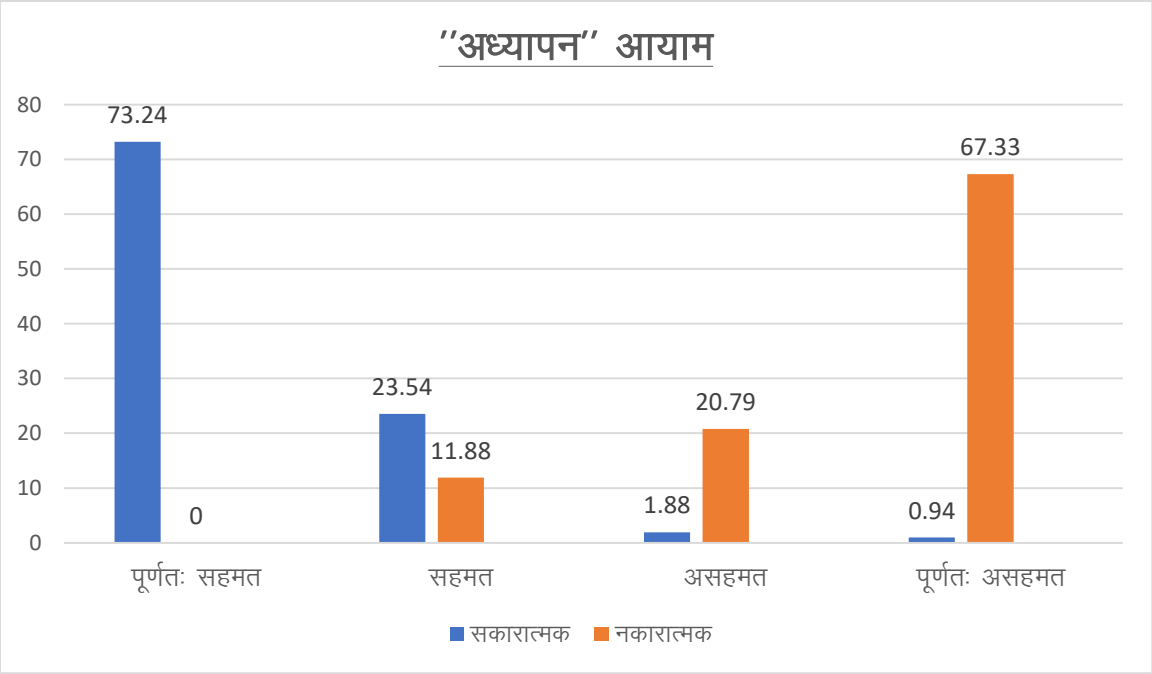

विश्लेषण :– उपयुक्त तालिका संख्या 2.1 एवं अनुलग्नक में अंकित सकारात्मक कथन संख्या 2,12,19 और 27 के अनुसार तृतीय आयाम ''प्रशासनिक कुशलता'' से प्राप्त आंकडों का प्रतिशत देखते हुए यह कहा जा सकता है कि 73.24 प्रतिशत पुरस्कार प्राप्त शिक्षक/शिक्षिकाओं में प्रशासनिक कुशलता पूर्णतः पर्याप्त है, 23.54 प्रतिशत पुरस्कार प्राप्त शिक्षक/ शिक्षिकाओं में प्रशासनिक कुशलता केवल पर्याप्त है, 1.88 प्रतिशत पुरस्कार प्राप्त शिक्षक/ शिक्षिकाओं में प्रशासनिक कुशलता पर्याप्त नहीं है तथा 0.94 प्रतिशत पुरस्कार प्राप्त शिक्षक/ शिक्षिकाओं में प्रशासनिक कुशलता पूर्णतः पर्याप्त नहीं है ।

उपयुक्त तालिका संख्या 2.1 एवं अनुलग्नक में अंकित नकारात्मक कथन संख्या 8 और 24 के अनुसार तृतीय आयाम ''प्रशासनिक कुशलता'' से प्रतिशत देखते हुए यह कहा जा सकता है कि शून्य प्रतिशत पुरस्कार प्राप्त शिक्षक/शिक्षिकाएं उक्त नकारात्मक कथनों से पूर्णतः सहमत है, 11.88 प्रतिशत

पुरस्कार प्राप्त शिक्षक/ शिक्षिकाओं में प्रशासनिक कुशलता पर्याप्त है,, 20.79 प्रतिशत पुरस्कार प्राप्त शिक्षक/ शिक्षिकाओं में प्रशासनिक कुशलता पर्याप्त नहीं है, 67.33 प्रतिशत पुरस्कार प्राप्त शिक्षक/शिक्षिकाओं में प्रशासनिक कुशलता पूर्णतः पर्याप्त नहीं है ।

निष्कर्ष

अवधारणा कमांक–1 **''पुरस्कार प्राप्त शिक्षक/शिक्षिकाओं में शिक्षण व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक रहता है।''स्वीकृत की जाती है** ।

अवधारणा क्रमांक–2 '' **पुरस्कार प्राप्त शिक्षक/शिक्षिकाओं में प्रशासनिक कुशलता पर्याप्त रहती है।''स्वीकृत की जाती है।**

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. उद्धृत के0जी रस्तोगी एवं एम0एल0 मित्तल, भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्यायें, मेरठ, रस्तोगी पब्लिकेशन, पाँचवा संस्करण, पृष्ठ–322
2. उद्धृत आर0एन0 सफाया अन्य, 'आधुनिक शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्ध, नई दिल्लीः धनपत राय पब्लिशिंग कम्पनी, 2005, पृष्ठ–197
3. उद्धृत आर0एप0 सफाया व अन्य, 'आधुनिक शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्ध, वहीं पृष्ठ–137
4. उद्धृत सुरेश भटनागर, आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ, मेरठः मेरठ पब्लिशिंग हाउस, 1991–92 पृष्ठ–276
5. जे0डी0 बटलर, फोर फिलासफीज, पृ0 202
6. श्रीमद् भगवदगीता, अध्याय 3 श्लोक–33
7. डॉ0 लक्ष्मीलाल के0ओड0, शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि' पृ0 210
8. वही, पृ0 231
9. वही, पृ0 218
10. उद्धृत डॉ0 अमरनाथ दत्त गिरी, भारतीय आधुनिक शिक्षा (त्रैमासिक पत्रिका,) नई दिल्ली, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, जनवरी 1996, पृष्ठ–2
11. अभिलाष दास, कबीर अमृत वाणीख इलाहाबादः कबीर पारख संस्थान, 2001, पृष्ठ–10 एवं 11